परिचय

दीपक सिंह बिष्ट

ऊपर नभ से वसुंधरा को
होता मैं गतिमान हूं,
कोसों सहज ही व्योम मापता
मेघों का अभिमान हूं।
कभी मैं गिरता जलधि विशाल पर
कभी भिगोता सूक्ष्म तृणों को,
कभी धरा के अंतर रिसता
नम करने वृक्षों की जड़ों को।
गिर पल्लव पर मोती बनकर
क्षण में अन्तर्ध्यान हूं,
रहूं भूमि या रहूं गगन
न लेता कभी विराम हूं।

सप्त वर्ण से धनुर इन्द्र का
शोभित है मुझसे ही होकर,
सिंचित सुरभित गंधित उपवन
करता मैं जीवंत सरोवर।
सिंधु, प्रपात, सरिता, धाराएं
इनका कलरव मुझसे होता,
मैं ही वसुधा के सीने में
जीवन का अंकुर हूं बोता।
प्राणों का संचार करूं मैं
चर अचर हर जंतु जीव में,
नील पिण्ड में सहज व्याप्त
जीवन की हूं आधार नींव मैं।

निराकार हूं, मैं 'नीर' हूं
मैं सूक्ष्म, मैं अति विशाल हूं,
सौम्य 'सलिल' हूं, मैं कठोर हिम
मैं जीवन, मैं महाकाल हूं।
तरल 'तोय' हूं, विरल वाष्प हूं
रूप प्रचण्डा महाश्राप हूं,
'अंबु' अर्घ्य हूं, महाभाव हूं
हर्ष भी हूं मैं, मैं विलाप हूं।
मैं ही प्रलय का वाहन 'जल' हूं
रौद्र रूप में हानि हूं,
सरल रूप में तरल धरोहर
सृष्टि का पालक 'पानी' हूं।

संपर्क करें:

दीपक सिंह बिष्ट
वैज्ञानिक 'सी'
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान,
रुड़की।